ठोकर

उसे स्वीकार न करें



आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए

ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करण: 2023

संपर्क जानकारी
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: **bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

अन्यथा जबतक इंगित न किया हो धर्म शास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल के पुनःसंपादित पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित है।

आर्थिक साझेदारी

इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता की वजह से सम्भव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता के लिए आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाएं या अपना योगदान कैसे करें यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ देखें। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन

उपदेश: apcwo.org/sermons | **पुस्तकें:** apcwo.org/books | **चर्च ऐप:** apcwo.org/app
बाइबिल कॉलेज: apcbiblecollege.org | **ई-लर्निंग:** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्श: chrysalislife.org | **संगीत:** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: pamfi.org | **ए.पी.सी. वर्ल्ड मिशंस:** apcworldmissions.org

(Hindi - Offences–Don't Take Them)

ठोकर

उसे स्वीकार न करें

विषयसूची

परिचय

1. जाल और ठोकर 1

2. ठोकरें आएगी 4

3. चुनाव आपके हाथ में है 18

4. ठोकर को मन में रखकर कार्य न करें 25

5. प्रेम हमें स्वतंत्र रखता है 31

परिचय

जीवन में हम सभी ठेस या ठोकर खाने के दर्द को महसूस करते हैं। सभी प्रकार की बातें हमें ठेस पहुंचा सकती हैं। कभी-कभी छोटी से छोटी बात से हम दुखी हो जाते हैं। हम दुखी महसूस करते हैं। किसी ने कुछ कहा जिससे हमें ठेस पहुंची। हमें अवसर नहीं मिला या मान्यता या तरक्की नहीं मिली, जिसके हम लायक हैं ऐसा हमने सोचा, हम दुखी हो जाते हैं। जब हम ठोकर खाते हैं या हमें ठेस पहुंचती हैं, तो वह हमारे अंदर कार्य करने लगता है जिसकी हमने कल्पना भी नहीं की और अंततः कई तरह से हमें प्रभावित करने लगता है। जिस व्यक्ति को ठेस पहुंची है और उसे सुलझाया नहीं गया है, वह अत्यंत अनुचित और असामान्य तरीके से सोच सकता है, बोल सकता है और आचरण कर सकता है। जब ऐसा कलीसिया के जीवन में, परमेश्वर के लोगों के मध्य होता है, तब हम कुछ अत्यंत दुखदायक बातों को होते हुए देखते हैं—बुराई करना, निंदा, लोगों का एक कलीसिया छोड़ कर दूसरे कलीसिया जाना, कलीसिया में फूट, मसीही अगुवों का एक दूसरे से अलग होना, और सबसे अधिक कमज़ोर देह। परंतु यदि हम ठोकर पर जय पाना समझते हैं, तो ऐसी बातों से बचा जा सकता है और स्थानीय कलीसिया तथा मसीह की देह अत्यंत मज़बूत हो सकती है।

जीवन की इस सामान्य घटना के विषय में बाइबल क्या कहती है? जब हमें ठेस पहुंचती है, ठोकर लगती है, तब हमें कैसे प्रतिक्रिया व्यक्त करनी है? जब हमें ठोकर लगती है, तब मन में उभरने वाली नकारात्मक भावनाओं से हम कैसे मुक्ति पा सकते हैं? आशा है कि इस सरल छोटे अध्ययन में, हमें इन प्रश्नों का उत्तर मिलेगा और हम ठोकर से पूर्णतया मुक्त होकर जीना सीखेंगे।

हमेशा ठोकर की रेखा से ऊपर जीएं।

परमेश्वर आपको आशीष दे!
आशीष रायचूर

1
जाल और ठोकर

जब हमें ठोकर लगती है तब हम किसी बात से या किसी की कही हुई किसी बात से अपमानित और आहत महसूस करते हैं। चोट या ठोकर खाने पर विभिन्न लोग विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएं व्यक्त करते हैं। कुछ लोग नाराज़ हो जाते हैं और बदला लेते हैं। कुछ लोग पीछे हट जाते हैं, सम्बंध तोड़ देते हैं और अपने आप को दूर कर देते हैं। कुछ लोग अन्य माध्यमों के ज़रिये, जैसे बदनामी करके, अपमानित करके, दुर्भावना फैलाकर बदला लेते हैं। हम सभी इस स्थान से होकर गए हैं और इनमें से एक या दो तरह से हमने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। हम सोचते हैं कि हमें ऐसा करने का अधिकार है क्योंकि हमने ठोकर खाई है। हम सोचते हैं कि किसी तरह बदला लेने से हमें अच्छा लगेगा और जो दर्द हमने महसूस किया वह कम होगा।

परंतु, हम ठोकर की इस समस्या पर बाइबल का दृष्टिकोण प्राप्त करने का प्रयास करें। शायद तब हमें बातें भिन्न दिखाई देगी।

मत्ती 16:23
उसने फिरकर पतरस से कहा, हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो! तू मेरे लिए ठोकर का कारण है, क्योंकि तू परमेश्वर की बातें नहीं, परंतु मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है।

यूनानी भाषा में "ठोकर" यह शब्द है *'स्कॉनडेलोन'* और वह दो बातों का उल्लेख करता है:

1) **फंदा या जाल:** यहां एक फंदे (प्रलोभन) का उल्लेख करता है, जो फंदे का घोड़ा (ट्रिगर) होता है। आप जाल को छूते हैं (या कांटे को पकडते हैं) और वह फंदा पलटकर आपकी ओर आता है। आप जाल में फंस जाते हैं।

2) **गिरावट का पत्थरः** रुकावट का पत्थर। यह एक पत्थर या चट्टान का उल्लेख करता है जो व्यक्ति को ठोकर दिलाता है और उसके लड़खड़ाकर गिरने का कारण बनता है। इस प्रकार ठोकर या ठेस ऐसा कुछ है जिसका उद्देश्य व्यक्ति को फंसाकर गिराना होता है।

ठोकर का अंतिम परिणाम किसी को भूल में डालना या उससे पाप करवाना है।

मत्ती 16 की इस घटना में ऐसा प्रतीत होता है कि पतरस प्रभु यीशु मसीह के लिए बहुत चिंता और खराई से बोल रहा है। परंतु यीशु ने कुछ अलग देखा। उसने देखा कि शैतान स्रोत है, और परमेश्वर की उन बातों के लिए जिनका यीशु अनुसरण कर रहा था, शैतान ठेस, जाल और ठोकर का पत्थर है।

वास्तव में ठोकर शैतान का फंदा (प्रलोभन) और शैतान की ठेस है। हमें फंसाने या हमें ठोकर दिलाने का शैतान का वह प्रयास है ताकि हम परमेश्वर के उद्देश्यों में आगे न बढ़ पाएं।

अगली बार यदि आप ठोकर महसूस करते हैं, तो उसका कारण चाहे जो भी व्यक्ति या वस्तु हो, तो रुककर सोचें कि आत्मिक तौर पर इसका क्या अर्थ है। यह व्यक्ति की समस्या नहीं है। यह परिस्थिति की भी बात नहीं है। कुछ अनिश्चित बातें हैं जो उस व्यक्ति से अधिक गम्भीर हैं जिसने आपको ठेस पहुंचाई है या उस परिस्थिति से जिसकी वजह से आपको ठोकर लगी। ठोकर जाल है और चोट करने वाला, ठेस पहुंचाने वाला का पत्थर है। यदि आप उस पर लड़खड़ाकर गिर जाएंगे, तो शैतान को आपको जाल में फंसाने या परमेश्वर के उद्देश्यों की ओर आपकी यात्रा में आपको ठोकर दिलाने का अवसर मिल जाएगा।

क्या आप शैतान को अपने जीवन में इस प्रकार का अवसर देना चाहते हैं? अवश्य ही नहीं! ठोकर का कारण या स्रोत चाहे जो भी हो, ठोकर खाने पर आपकी एक प्रतिक्रिया अपने हृदय से उस ठोकर को दूर रखना होने पाए। ठोकरों को या नाराज़गी का आपके हृदय में कोई स्थान न रहने पाए।

मनन



1) हाल ही के उस समय के विषय में मनन करें जब आपको ठेस पहुंची या जब आपको ठोकर खाने का अवसर था।

- आपको किस कारण ठेस पहुंची?
- आपको कैसे महसूस हुआ? आपको ठेस पहुंची है यह आपने कैसे जाना?
- आपने क्या किया? जब आपको ठेस पहुंची या आपने ठोकर खाई तब आपने उससे कैसे निपटारा किया?
- पीछे पलटकर देखने पर, जब आपने ठोकर खाई तब आपने जिस प्रकार उन बातों से निपटारा किया, उस विषय में क्या आपको प्रसन्नता हुई?
- जिस व्यक्ति ने आपको ठोकर दी है या ठेस पहुंचाई है (यदि कोई है) तो उसके साथ आपके रिश्ते को पुनः स्थापित करने हेतु क्या आपको कुछ करने की ज़रूरत है?

2
ठोकरें आएगी

इस अध्याय में हम ठोकर या चोट के तीन विभिन्न स्रोतों पर विचार करते हैं जिनका हमें सामान्य तौर पर सामना करना पड़ता है। अर्थात ये ही एकमात्र स्रोत नहीं हैं, परंतु शायद सर्वाधिक सामान्यः

1) संसार की ओर से प्राप्त होने वाली ठोकरें
2) ठोकरें जो अनजाने में आती हैं
3) अधिकारपद पर आसीन लोगों की ओर से ठोकरें

हम उन तीन कारणों पर भी चर्चा करेंगे कि विश्वासी अपने आत्मिक जीवनों में क्यों ठोकरों का सामना करते हैं। ये बातें विशिष्ट तौर पर विश्वासियों के साथ होती हैंः

1) परमेश्वर के विषय ठोकर खाना
2) यीशु मसीह के कारण ठोकर खाना
3) वचन और आत्मा के कारण ठोकर खाना

हम उन तीन स्रोतों का अवलोकन करेंगे जो अत्यंत सामान्य हैंः

संसार की ओर से आने वाली ठोकरें

मत्ती 18:6,7

[6] परंतु जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं, एक को ठोकर खिलाएगा, उसके लिए भला होता कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह गहिरे समुद्र में डुबाया जाता।

[7] ठोकरों के कारण संसार पर हाय! ठोकरों का लगना तो अवश्य है; परंतु हाय उस मनुष्य पर जिसके द्वारा ठोकर लगती है!

ठोकरों के लिए दिया गया यूनानी शब्द है *'स्कॉनडेलोन,'* इस शब्द का हमने पिछले अध्याय में अध्ययन किया। मत्ती 18 के इन वचनों के संदर्भ में, ठोकर या ठेस का उद्देश्य परमेश्वर के छोटों में से एक (निष्पाप, विनम्र लोग), अर्थात विश्वासियों को पाप करने हेतु प्रेरित करना है।

वचन 7 मे तीन बातों की रूपरेखा प्रस्तुत की गई हैः

1) संसार ठोकरों से भरा पड़ा है।
2) ठोकरें आएगी।
3) ठोकरें लोगों के द्वारा आती हैं।

संसार ठोकरों से भरा पडा है। इसलिए यीशु ने कहा *"ठोकरों के कारण संसार पर हाय!"* संसार में यीशु पर विश्वास करने वाले लोगों के लिए जाल और ठोकर के पत्थर हैं, जो इस प्रतीक्षा में हैं कि उन्हें पाप में गिराएं, भूल करने पर विवश करें और उन्हें विश्वास से दूर करें। वस्तुतः जैसे-जैसे समय अंत की ओर बढ़ता जाता है, प्रभु यीशु मत्ती 24:10 में चेतावनी देता हैः *"तब बहुतेरे ठोकर खाएंगे और एक दूसरे को पकड़वाएंगे, और एक दूसरे से बैर रखेंगे।"*

ठोकरें आएगी। विश्वासियों के नाते हम ठोकरों से बचे नहीं हैं। संसार ठोकरों से भरा पडा है और हम इस संसार में रहते हैं। संसार अपनी ठोकरों को आपके विरोध में उछालेगा—फंदा और ठोकर के पत्थर—उनके लिए तैयार रहेगा। और दुख की बात यह है कि कभी-कभी ठोकरें दूसरे विश्वासियों के द्वारा आती हैं।

ठोकरें लोगों के द्वारा आती हैं। जब यीशु ने कहा *"हाय उस मनुष्य पर जिसके द्वारा ठोकर लगती है।"* वह हमें बता रहा था कि लोग ही हैं जो ये ठोकरे देंगे। ठोकरें आती हैं क्योंकि आपके आसपास लोग ऐसी बातें कह रहे हैं और कर रहे हैं जो आपको ठोकर दे सकता हैं, ठेस पहुंचा सकती हैं।

यीशु ने पहले ही घोषणा की थी कि उस व्यक्ति के साथ क्या होता है जिसके द्वारा ठोकर आती है। उस व्यक्ति के लिए विपत्ति, मुश्किल और

विनाश है। यदि कोई आपके सामने फंदा और ठोकर का पत्थर फेंकता है ताकि आप प्रभु के विरोध में पाप करें, तो दूर हट जाएं और परमेश्वर को कार्य करने दें। उनके विरोध में आपको कुछ करने की ज़रूरत नहीं है।

अनजाने में आने वाली ठोकरें

सभोपदेशक 7:21,22

[21] जितनी बात कही जाए सब पर कान न लगाना, ऐसा न हो कि तू सुने कि तेरा दास तुझी को शाप देता है;

[22] क्योंकि तू आप जानता है कि तू ने भी बहुत बार औरों को शाप दिया है।

कभी-कभी हम उन लोगों की बातों को बुरा मानते हैं या उनसे ठोकर खाते हैं जिनका उद्देश्य हमें ठोकर देना, ठेस पहुंचाना नहीं था। वे मजाक से, या बिना किसी उद्देश्य से कुछ बातों को कह सकते हैं या कर सकते हैं, और फिर भी उनके द्वारा कही गई या की गई बातों के द्वारा हम ठोकर खाते हैं। दूसरे शब्दों में, इन बातों के साथ सहज व्यवहार करें। उसे छोड़ दें। उस बात को बढ़ाने की कोशिश न करें। दूसरों पर वही अनुग्रह करें जो आप चाहते हैं कि आप पर किया जाए। हम में से प्रत्येक ने बिना ज्यादा सोचे-समझे बातें कहीं और की हैं और बाद में जाना कि किसी को उससे ठोकर लगी, उन्हें ठेस पहुंची, जबकि हमारा ऐसा उद्देश्य नहीं था।

अधिकार पद पर आसीन लोगों से ठोकर

1 पतरस 2:18-21

[18] हे सेवको, हर प्रकार के भय के साथ अपने स्वामियों के आधीन रहो, न केवल भलों और नम्रों के, पर कुटिलों के भी।

[19] क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का विचार करके अन्याय से दुख उठाता हुआ क्लेश सहता है, तो यह सुहावना है।

[20] क्योंकि यदि तुमने अपराध करके घूसे खाए और धीरज धरा, तो इसमें क्या बड़ाई की बात है? पर यदि भला काम करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है।

[21] और तुम इसी के लिए बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिए दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो।

1 पतरस 2 में, वचन 13 से आगे, पतरस विश्वासियों को अधिकारियों के अधीन रहने के विषय में निर्देश दे रहा है। आज, संदर्भ नए नियम के समयों जैसा नहीं है, परंतु सच्चाई तो वही है। कर्मचारियों के नाते हमें एक कार्यस्थल में अपने अधिकारियों के अधीन रहना है। नागरिकों के रूप में, हम नागरी प्राधिकरण के अधीन हैं। परिवार के सदस्यों के रूप में हम उन लोगों की अधीनता में चलते हैं जो घर में हम पर अधिकारी हैं।

यदि हमारे अधिकारी कठोर हैं, हमारे साथ अन्याय का बर्ताव करते हैं, और जब हम भलाई करते हैं तब हमें क्लेश देते हैं, तो हमें क्या करना चाहिए? आज के संदर्भ में ये अधिकारी हो सकते हैं, जो अनुचित व्यवहार करते हैं; वे अधिकारी जो पक्षपात करते हैं; जो हमारे कार्य को अनदेखा करते हैं; जो जानबूझकर हमारे वेतन की तरक्की रोक देते हैं। हमें क्या करना चाहिए? पतरस ने इस बात का उत्तर दिया हैः

- अधीन रहें।
- दुख सहें।
- उसे धीरज से स्वीकार करें।

केवल परमेश्वर हमें ऐसा करने का अनुग्रह प्रदान कर सकता है। पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा हम ऐसा करने की योग्यता रखते हैं, उसी तरह जैसे मसीह ने किया। हम उनके दृष्टिकोण से बातों को देखने का प्रयास करते हैं। हम बड़ी तस्वीर देखने का प्रयास करते हैं जिसे वे लोग अधिकार पद पर विराजमान लोगों के रूप में देखते होंगे, जिससे अक्सर हम वंचित रह जाते हैं। अगुवों के रूप में उन पर जो दबाव होता है उसे हम अनुभव करने की कोशिश करते हैं।

यदि बारम्बार अन्याय होता है और हमारे हित को खतरा होता है, तो हमें अपने आपको सुरक्षा के स्थान पर हटा देना चाहिए। हमारे आधुनिक समय का संदर्भ हमें अवसर प्रदान करता है कि हम वहां से निकलकर सुरक्षा के स्थान में चले जाएं, नौकरी आदि बदल दें। नए नियम के समयों में नौकरों या दासों के पास ऐसा करने का अवसर नहीं था, परंतु आज

परिस्थिति इसके विपरीत है। इसके अलावा, अधिकांश परिस्थितियों में हमारे पास अपना दृष्टिकोण व्यक्त करने का जहां हमारे साथ अन्याय हुआ है ऐसा हमें लगता है उसके विषय में अधिकार पद पर विराजमान अधिकारियों के साथ चर्चा करने का, और कानूनी तौर पर तथा सदाचार की दृष्टि से स्वीकारणीय तरीके से उस विषय को आगे बढ़ाने का अवसर हमारे पास है।

इन सारी बातों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि हम अधिकार पद पर कार्यरत् लोगों के प्रति अपने हृदयों को नाराज़गी या ठोकरों से मुक्त रखें। ठोकरें आएगी। हम अधिकारियों द्वारा ठोकर खाएंगे। परंतु नया नियम हमें उन लोगों के प्रति यह नाराज़गी रखने की अनुमति नहीं देता।

यदि आपको किसी आत्मिक अगुवे द्वारा ठोकर लगती, ठेस पहुंचती है, मान लीजिए आपकी स्थानीय कलीसिया के पासबान? शायद उन्होंने ऐसा निर्णय लिया जिसे आप समझ नहीं पाए। शायद उन्होंने सेवकाई के क्षेत्र में किसी और को चुन लिया जबकि आप उस पद पर सेवा करने की उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे। शायद उन्होंने कई वर्षों तक आपके द्वारा की गई विश्वसनीय सेवा को अनदेखा किया और किसी और की प्रशंसा की जिसने उतनी सेवा नहीं की जितने लम्बे समय तक आपने सेवा की है। कलीसियाई जीवन में कई भिन्न परिदृश्य हो सकते हैं जिससे व्यक्ति को ठेस पहुंच सकती है। आपको क्या करना चाहिए? पतरस ने यही बात जो अगुवों को लिखी, यहां लागू होती है। अधीन रहें। दुख सहें। उसे धीरज के साथ स्वीकार करें। जहां कहीं सम्भव हो, स्वीकारणीय और सम्मानीय तरीके से आपकी चिंता या दृष्टिकोण व्यक्त करें। और यदि आपके हित के साथ दुर्व्यवहार होता है, खतरा और हानि पहुंचती है, तो सुरक्षा के स्थान पर चले जाएं। आप चाहे जो करें, किसी भी व्यक्ति के विरोध में ठोकर या नाराज़गी न रखें।

अब हम उन तीन बातों पर चर्चा करेंगे कि विश्वासियों को उनके आत्मिक जीवनों में ठोकरों का सामना क्यों करना पड़ता है?

परमेश्वर से ठोकर

उत्पत्ति 4:3-7

[3] कुछ दिनों के पश्चात् कैन यहोवा के पास भूमि की उपज में से कुछ भेंट ले आया।
[4] और हाबिल भी अपनी भेड़-बकरियों के कई एक पहिलौठे बच्चे भेंट चढ़ाने ले आया और उनकी चर्बी भेंट चढ़ाई; तब यहोवा ने हाबिल और उसकी भेंट को तो ग्रहण किया,
[5] कैन और उसकी भेंट को उसने ग्रहण न किया। तब कैन अति क्रोधित हुआ, और उसके मुंह पर उदासी छा गई।
[6] तब यहोवा ने कैन से कहा, तू क्यों क्रोधित हुआ? और तेरे मुंह पर उदासी क्यों छा गई है?
[7] यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जायेगी? और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहता है, और उसकी लालसा तेरी ओर होगी, और तू उस पर प्रभुता करेगा।

कैन क्रोधित था और उसका चेहरा दुखी था। वह उदास था। वह परमेश्वर से नाराज़ था। कैन की दृष्टि में परमेश्वर अन्यायी, पक्षपाती, और गलत था। परंतु परमेश्वर न्यायी था। कैन के पास परमेश्वर के सामने सही करने का और परमेश्वर द्वारा ग्रहणयोग्य हो ऐसा बलिदान चढ़ाने का वही अवसर था जो हाबिल के पास था। कैन चाहता था कि परमेश्वर उसकी शर्तों पर काम करे। यह घमण्ड था।

कैन परमेश्वर से नाराज़ हो गया, उसने ठोकर खाई और फिर कर परमेश्वर के निकट आने के लिए तैयार नहीं था। ठोकर और घमण्ड के इस स्थान में पाप कैन को अपने नियंत्रण में लेने की प्रतीक्षा में था। फिर भी जो कुछ उसके सामने सही था, उसके द्वारा परमेश्वर चाहता था कि कैन पाप पर प्रभुता करे।

कभी-कभी, विश्वासी परमेश्वर से नाराज़ हो जाते हैं। सब प्रकार की जीवन परिस्थितियां उन्हें महसूस कराती हैं कि परमेश्वर ने उनके प्रति अनुचित किया है और उनके साथ अन्याय किया है। वे सोचते हैं कि वे इससे बेहतर के लायक थे। वे समझ नहीं सकते कि क्यों किसी और ने आशीष पाई, या क्यों किसी और को उनसे बेहतर मिला। वे चाहते हैं कि परमेश्वर उनकी शर्तों पर काम करे। यह आत्मिक अहंकार है। यह ऐसा अहंकार है

जिसके कारण हम परमेश्वर से नाराज़ हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में होने का खतरा यह है कि, जहां हम परमेश्वर से नाराज़ हो जाते हैं, ठोकर खाते हैं, वहां पाप हम पर प्रभुता करने के लिए प्रतीक्षा में रहता है। यह ठोकर पाप के लिए प्रवेश द्वार बन जाती है, और उसके द्वारा शैतान आकर विश्वासी के जीवन में संवेदनशील क्षेत्र पर नियंत्रण पा लेता है।

इसका प्रतिविष है पश्चाताप करना, मन फिराना। परमेश्वर के पास आना और यह कबूल करना कि वह हमेशा ही अच्छा, सही और न्यायी है। हमें गलतफहमी हुई है कि वह कौन है। हम घमण्ड में थे और चाहते थे कि सब कुछ हमारे तरीके से हो।

जब भविष्यद्वक्ता ने निराशा को महसूस किया

मत्ती 11:2-6

[2] यूहन्ना ने बन्दीगृह में मसीह के कामों का समाचार सुनकर अपने चेलों को उससे यह पूछने भेजा,

[3] कि क्या आनेवाले आप ही हैं, या हम दूसरे की बाट जोहें?

[4] यीशु ने उत्तर दिया, जो कुछ तुम सुनते हो और देखते हो, वह सब जाकर यूहन्ना से कह दो-

[5] कि अन्धे देखते हैं और लंगड़े चलते फिरते हैं; कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं और बहिरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं; और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।

[6] और धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर (यूनानी *स्कॉनडेलिज़ो*) **न खाए।**

इस दृश्य की कल्पना करें। बपतिस्मा करने वाला यूहन्ना ऐसा व्यक्ति था जिसने दैवीय प्रेरणा से यीशु को पहचाना, और संसार के सामने उसका परिचय कराया। यूहन्ना ही था जिसने उसे जगत के पापों को उठा ले जाने वाले परमेश्वर के मेम्ने के रूप में घोषित किया (यूहन्ना 1:29)। यूहन्ना ही ने यह घोषणा की कि यीशु पवित्र आत्मा में बपतिस्मा देने वाला होगा। परंतु अब यूहन्ना को कैद में डाल दिया गया है, यीशु अपनी सेवकाई जारी रखता है, परंतु वह यूहन्ना को कैद से बाहर लाने के लिए कुछ भी नहीं करता। कल्पना करें कि यूहन्ना के मन में क्या चल रहा होगा। यदि यीशु सचमुच मसीह है, तो वह निःसंदेह मुझे कैद से बाहर निकालेगा। परंतु यह व्यक्ति

कुछ भी नहीं कर रहा है। क्या वह सचमुच मसीह है? और इस कारण यूहन्ना अपने चेलों को पता करने भेजता है। यीशु यूहन्ना को यह प्रोत्साहन देकर अपना उत्तर समाप्त करता है कि वह उसके कारण ठोकर न खाए। यूहन्ना के संदर्भ में इसे आसान शब्दों में कहा जाए, तो यीशु मुख्य रूप से कह रहा था, "यूहन्ना, मैं जानता हूं कि तू अपने आप को कैद में पाकर निराश महसूस कर रहा है। परंतु ठोकर को अपने दिल में जगह न दे।"

जब हमें लगता है कि परमेश्वर ने हमें "नीचा दिखाया है," तब हम यह भी जानते हैं कि वह किसी को नीचा नहीं दिखाता। और सबसे अधिक उसके प्रति किसी प्रकार की नाराज़गी को अपने में प्रवेश न करने दें। हर परिस्थिति में क्या करना चाहिए वह जानता है।

यीशु मसीह के कारण ठोकर खाईः ठेस की चट्टान

यशायाह ने भविष्यद्वाणी की और उसका उल्लेख ठोकर का पत्थर और ठेस की चट्टान के रूप कियाः

यशायाह 8:13-15

13 सेनाओं के यहोवा ही को पवित्र जानना; उसी का डर मानना, और उसी का भय रखना।

14 और वह शरणास्थान होगा, परन्तु इस्राएल के दोनों घरानों के लिये ठोकर का पत्थर और ठेस की चट्टान, और यरूशलेम के निवासियों के लिये फन्दा और जाल होगा।

15 और बहुत से लोग ठोकर खाएंगे; वे गिरेंगे और चकनाचूर होंगे; वे फन्दे में फसेंगे और पकड़े जाएंगे।

यशायाह 28:16

इसलिये प्रभु यहोवा यों कहता है, देखो, मैं ने सिय्योन में नेव का एक पत्थर रखा है, एक परखा हुआ पत्थर, कोने का अनमोल और अति दृढ़ नेव के योग्य पत्थरः और जो कोई विश्वास रखे वह उतावली न करेगा।

बड़ी दिलचस्प बात है कि दोनों, प्रेरित पौलुस रोमियों में और प्रेरित पतरस 1 पतरस में, यीशु मसीह के सम्बंध में यशायाह की भविष्यद्वाणी का उध्दरण लेते हैं।

जब यीशु आया तब यहूदियों ने यीशु का इन्कार किया क्योंकि वह मसीह की उनकी अपेक्षाओं के अनुसार नहीं था। प्रेरित पौलुस रोमियों 9:30-33 में यशायाह की भविष्यद्वाणी की परिपूर्णता के विषय में लिखता है। इस्राएल ने यीशु पर ठोकर खाई क्योंकि वे विश्वास से धार्मिकता को ग्रहण कर पाने में अक्षम थे, बजाय उसके उन्होंने अपनी ही धार्मिकता स्थापित करने का प्रयास किया।

प्रेरित पतरस ने इस प्रकार लिखाः

1 पतरस 2:6-8

[6] इस कारण पवित्र शास्त्र में भी आया है कि देखो, मैं सिय्योन में कोने के सिरे का चुना हुआ और बहुमूल्य पत्थर धरता हूं; और जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह किसी रीति से लज्जित नहीं होगा।

[7] इसलिए तुम्हारे लिए जो विश्वास करते हो, वह तो बहुमूल्य है, परंतु जो विश्वास नहीं करते उनके लिए जिस पत्थर को राजमिस्त्रीयों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया;

[8] और ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान हो गया है। क्योंकि वे तो वचन को न मानकर ठोकर खाते हैं और इसी के लिए वे ठहराए भी गए थे।

हम विश्वासियों के लिए, यीशु मसीह कोने के सिरे का पत्थर है, और वह अनमोल है। फिर भी कुछ लोगों के लिए वह ठोकर का पत्थर और ठेस की चट्टान है।

यीशु मसीह कुछ लोगों के लिए ठोकर का कारण है और वे इसका बदला हम से, उसके लोगों से, कलीसिया से लेते हैं। यीशु मसीह में आपके विश्वास के कारण यदि लोग आपसे ठोकर खाते हैं, तो अचम्भित न हों। मसीह आप में है इस कारण लोग ठोकर खाते हैं। जैसा कि पेरित पौलुस ने बतायाः *"क्योंकि हम परमेश्वर के निकट उद्धार पानेवालों, और नाश होनेवालों, दोनों के लिए मसीह की सुगन्ध हैं, कितनों के लिए तो मरने के निमित्त मृत्यु की गन्ध, और कितनों के लिए जीवन के निमित्त जीवन की सुगन्ध, और उन बातों के योग्य कौन है?"* (2 कुरिन्थियों 2:15,16)।

यीशु ने पहले ही मत्ती 26:31,33 में बताया कि उसके चेले उसके क्रस पर चढ़ाए जाने के समय ठोकर खाएंगे, *"तब यीशु ने उनसे कहा, "तुम सब आज ही रात को मेरे विषय में ठोकर खाओगे* (यूनानी *स्कॉनडेलिज़ो*) *क्योंकि लिखा है कि मैं चरवाहे को मारूंगा और झुण्ड की भेड़ें तित्तर बित्तर हो जाएंगी। इस पर पतरस ने उससे कहा, यदि सब आपके विषय में ठोकर खाएं* (यूनानी *स्कॉनडेलिज़ो*) *तो खाएं, परन्तु मैं कभी भी ठोकर न खाऊंगा।"* पतरस ने भले ही बहादुर बनने की कोशिश की, फिर भी उसने ठोकर खाई।

यीशु ने कई स्थानों में आने वाली ठोकरों के विषय में बताया। यूहन्ना 16:1,2: *"ये बातें मैंने तुमसे इसलिए कही कि तुम ठोकर* (यूनानी *स्कॉनडेलिज़ो*) *न खाओ। वे तुम्हें आराधनालयों में से निकाल देंगे, वरन् वह समय आता है कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा वह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूं।"*

इस प्रकार विश्वासी यीशु मसीह में उनके विश्वास के कारण ठोकर खाएंगे।

वचन और आत्मा के कारण ठोकर खाई

यहां पर यशायाह की ओर से दूसरी भविष्यद्वाणी है:

यशायाह 28:9-13

[9] वह किसको ज्ञान सिखाएगा, और किसको अपने समाचार का अर्थ समझाएगा? क्या उनको जो दूध छुड़ाए हुए और स्तन से अलगाए हुए हैं? क्योंकि आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा,

[10] नियम पर नियम, नियम पर नियम, थोड़ा यहां, थोड़ा वहां।

[11] वह तो इन लोगों से परदेशी होंठों और विदेशी भाषावालों के द्वारा बातें करेगा;

[12] जिन से उसने कहा, विश्राम इसी से मिलेगा; इसी के द्वारा थके हुए को विश्राम दो; परन्तु उन्होंने सुनना न चाहा।

[13] इसलिये यहोवा का वचन उनके पास आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम, नियम पर नियम है, थोड़ा वहां, जिस से वे ठोकर खाकर चित्त गिरें और घायल हो जाएं, और फंदे में फंसकर पकड़ें जाएं।

कभी-कभी लोग वचन से, परमेश्वर के सत्य से ठोकर खाते हैं। वचन का उद्देश्य हमारी उन्नति करना है, हमें ज्ञान और समझ प्रदान करना है। यशायाह 28:11,12 आत्मा के कार्य और अन्य अन्य भाषाओं में बोलने का उल्लेख करता है, जैसा कि प्रेरित पौलुस द्वारा 1 कुरिन्थियों 14:21 में उद्धृत किया गया है। परंतु लोग इसका भी इन्कार करते हैं। वे लड़खड़ाकर गिरते हैं वे ठोकर खाते हैं और जाल में फंस जाते हैं। क्योंकि वे वचन या आत्मा को ग्रहण नहीं कर पाते।

विश्वासी के जीवन में यह निम्नलिखित तरीके से होता हैः

जब परमेश्वर आपकी समझ का विस्तार करता है

कभी-कभी विश्वासी के रूप में आप वचन और आत्मा के द्वारा ठोकर खाते हैं क्योंकि वह आपके सम्बंध के दायरे में नहीं आता। परमेश्वर हृदय को उजागर करने के लिए बुद्धि को ठोकर देता है। अतः जब आप सोचते हैं कि आपके पास आपका सारा ईश्वरविज्ञान सही है और आप पवित्र आत्मा के साथ सिद्ध बहाव में हैं, तब आपके जीवन में ऐसा कोई आता है जिसके द्वारा वचन और आत्मा इस रीति से प्रगट किए जाते हैं जिसकी आपने कल्पना भी नहीं की। वह वास्तव में आपकी समझ को हिलाकर रख देता है। आपको एक चुनाव करना पड़ता है। आप या तो उसके द्वारा ठोकर खा सकते हैं और उसे पूरी रीति से छोड़ दे सकते हैं या आप परमेश्वर से बिनती कर सकते हैं कि आपको बढ़ने हेतु अनुग्रह प्रदान करे और आपकी आत्मिक समझ, क्षमता, और अनुभव का विस्तार करे। [**टिप्पणीः** हम पाखण्डी शिक्षा का उल्लेख नहीं कर रहे हैं। ऐसा कुछ जिसे झूठी शिक्षा या भूल कहते हैं। हम ऐसे किसी बात का उल्लेख कर रहे हैं जो परमेश्वर की ओर से है, परंतु वह नहीं जिसके आप अभ्यस्त हैं।]

गलत बात यह है कि आप ऐसी किसी बात से लड़ना आरम्भ करते हैं जिसे आप समझते नहीं। मसीही विश्व में कितनी बार हम विश्वासियों को एक दूसरे पर केवल इसलिए कीचड़ उछालते हुए देखते हैं क्योंकि वे किसी और के द्वारा वचन और आत्मा के कार्य से ठोकर खाते हैं। वे वचन और आत्मा के कार्य की अभिव्यक्ति को ग्रहण कर पाने में अक्षम होते हैं

और इस कारण ठोकर खाते हैं और उसके बाद किसी बात को मिटाने का मन बना लेते हैं जिसे वे समझते नहीं।

जब दूसरों ने आपमें हो रहे परमेश्वर के कार्य को गलत समझा

दूसरी बात जिसमें विश्वासी वचन और आत्मा के द्वारा ठोकर का सामना करते हैं वह तब होता है जब वे लोग आप पर हमला बोलते हैं और इस बात को समझ नहीं पाते कि परमेश्वर आपके जीवन में क्या कर रहा है। कभी-कभी लोग आप पर आक्रमण करते हैं, ठेस पहुंचाते हैं, उपहास करते हैं, आपकी आलोचना करते हैं और आपको भला-बुरा कहते हैं, क्योंकि उसके वचन और उसकी आत्मा के द्वारा आपके माध्यम से होने वाले परमेश्वर के कार्य को समझ पाने की योग्यता उनमें नहीं होती।

यीशु ने इस बात को समझाने के लिए बोने वाले के दृष्टांत में उस बीज का उल्लेख किया जो पत्थरीली भूमि पर गिरा था। यीशु ने वचन के कारण आने वाले सताव के विषय में कहा जिसके कारण व्यक्ति ठोकर खाता हैः

मत्ती 13:21
परंतु अपने में जड़ न रखने के कारण वह थोड़े ही दिन का है, और जब वचन के कारण क्लेश या उपद्रव होता है, तो तुरंत ठोकर खाता है (यूनानी *स्कॉनडेलिज़ो*)।

प्रेरित पौलुस ने अपने समय में खतना को बढ़ावा देने के बजाए, यीशु मसीह के क्रूस के संदेश को प्रचार करने के कारण ठोकर का सामना कियाः

गलातियों 5:11
परन्तु हे भाइयो, यदि मैं अब तक खतना का प्रचार करता हूं, तो क्यों अब तक सताया जाता हूं; फिर तो क्रूस की ठोकर (यूनानी *स्कॉनडेलिज़ो*) **जाती रही।**

जब वचन और आत्मा के कार्य के पक्ष में खड़े रहना अलोकप्रिय होता है

गलातियों 1:9,10
[9] जैसा हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूं कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुमने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो श्रापित हो। अब मैं क्या मनुष्यों को मनाता हूं या परमेश्वर को? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूं?

[10] यदि मैं अब तक मनुष्यों को ही प्रसन्न करता रहता, तो मसीह का दास न होता।

लोकप्रिय राय का तरीका जिसका वर्णन रोमियों 1 में किया गया है।

लोग

- *"सत्य को अधर्म से दबाते रखते हैं"* (रोमियों 1:18)।
- *"व्यर्थ विचार करने"* (रोमियों 1:21)।
- *"निर्बुद्धि मन अंधेरा हो जाता"* (रोमियों 1:21)।
- *"अपने आपको बुद्धिमान जानकर वे निर्बुद्धि बन गए"* (रोमियों 1:22)।
- *"उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला"* (रोमियों 1:25)।
- *"उन्होंने परमेश्वर को पहचानना न चाहा"* (रोमियों 1:28)।
- *"निक्कमे मन, वे अनुचित काम करें"* (रोमियों 1:28)।
- ऐसे ऐसे काम करते हैं जो *"मृत्युदण्ड के योग्य हैं"* (रोमियों 1:32) और
- वे ऐसे काम करने वालों से प्रसन्न रहते हैं जो *"मृत्युदण्ड के योग्य हैं"* (रोमियों 1:32)।

विवाह, कामुकता, परिवार, पति-पत्नी की भूमिका, माता-पिता का सम्मान, नागरिक प्राधिकरण का सम्मान, परमेश्वर के प्रति आदर, नियुक्त नेतृत्व, आदि के सम्बंध में परमेश्वर ने जो कहा है उसका यदि आज हम अनुमोदन करते हैं, तो संसार हमारा मज़ाक उड़ाता है। वे इसे असहिष्णु, धर्मान्ध करार देते हैं, इसे घृणा कहते हैं। विश्वासी को क्या करना चाहिए? कलीसिया को कैसे प्रतिक्रिया व्यक्त करनी चाहिए? मसीही अगुवों को कैसे प्रतिक्रिया व्यक्त करनी चाहिए? कलीसिया के पास केवल एक विकल्प है। जैसा कि पौलुस ने सिखाया, *"जीवित परमेश्वर की कलीसिया है, और जो सत्य का खंभा, और नेव है"* (1 तीमुथियुस 3:15)। कलीसिया को समाज में सच्चाई का पक्षधर और पालनकर्ता कहा जाता है। हम ठोकर से बचने के लिए और मनुष्यों को प्रसन्न करने के लिए परमेश्वर के सत्य से समझौता नहीं कर सकते। हमें सच्चाई से समझौता किए बिना प्रेम में सत्य बोलना चाहिए। हम लोगों से वैसे ही प्रेम करें जैसे वे हैं, परंतु परमेश्वर के

सत्य को भी प्रस्तुत करें जिसमें परिवर्तन करने की सामर्थ है। कुछ लोगों को परमेश्वर के वचन का सत्य और उसके आत्मा का कार्य आपत्तिजनक लगता है और वे उसका प्रतिकार करते हैं। हमारे पास परमेश्वर के शब्द का पक्ष लेने के अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं है।

और कई अवसर

ठोकरें आएगी। विश्वासी होने के नाते, ठोकर खाने के कई अवसर हमें आएंगे। हमने इस अध्याय में कुछ की रूपरेखा प्रस्तुत की है। वास्तविक समस्या है ठोकरों के आने पर हम उनका सामना कैसे करते हैं। **स्मरण रखें ठोकर खाने का प्रत्येक अवसर शैतान के जाल में फंसने का और शत्रु के द्वारा ठोकर खाने का एक अवसर है।** हमें दृढ़-संकल्प रहना है कि किसी भी दशा में, किसी भी परिस्थिति में, हम अपने जीवनों में ठोकर को स्थान नहीं देंगे।

मनन



1) क्या आपने इस अध्याय में वर्णित ठोकरों का कभी सामना किया है? विचार करें। आपने निम्नलिखित सूची में बताई गई अवस्थाओं को किस रीति से सम्भाला?

- ठोकरें जो संसार से आती हैं
- ठोकरें जो अनजाने में आती हैं
- ठोकरें जो उच्च अधिकारियों से आती हैं
- परमेश्वर से ठोकर खाने पर
- यीशु से ठोकर खाने पर
- वचन और आत्मा से ठोकर खाने पर

3
चुनाव आपके हाथ में

ठोकर की रेखा के ऊपर जीना

नीतिवचन 4:23
सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्त्रोत वहीं है।

मत्ती12:35
भला, मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है, और बुरा मनुष्य बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है।

हमें अपने हृदयों की रक्षा करना है, हमारे भीतरी मनुष्यत्व की, क्योंकि हमारे हृदयों से ही वे शक्तियां आती हैं जो हमारे जीवनों को आकार देती हैं।

जो हमारे हृदयों में है वह हमारे जीवनों में बाहर निकलकर आएगा।

हमारे जीवनों में जो कुछ हो रहा है उसे यदि हम बदलना चाहते हैं, तो हमारे हृदय में संचित बातों को हमें बदलना होगा।

जैसा कि हमने देखा है, ठोकर फंसने या लड़खड़ाकर गिरने का अवसर है। वह हमें गुमराह कर पाप और भूल में गिरा देता है। सब प्रकार की परिस्थितियों में सब प्रकार के लोगों के द्वारा ठोकरें आएगी। परंतु, उस ठोकर को लेना या न लेना यह चुनाव हमारे हाथ में है। जब हमारे मार्ग में ठोकर आती है, तो हम या तो ठोकर न खाने का फैसला कर सकते हैं या हम ठोकर खाने का चुनाव कर सकते हैं।

जिस क्षण आपका ठोकर से—किसी द्वारा कही गई या की गई कोई बात जो ठेस पहुंचाती है, आपको अपमानित करती है या क्रोधित करती है—सामना होता है उसी क्षण आप चुनाव कर सकते हैं। आप पूरी तत्परता से अपने हृदय की रक्षा करने का चुनाव कर सकते हैं और इस ठोकर को खड़े रहने के लिए कोई स्थान नहीं देते। आप अपने हृदय में इस ठोकर

की तलछट को ग्रहण करने से इन्कार करने का चुनाव कर सकते हैं। आप जानते हैं कि बुरी तलछट का परिणाम आपके जीवन में बुरी बातें आएगी।

जब आपके सामने ठोकर रखी जाती है, तब आप उसके ऊपर रहने का निर्णय ले सकते हैं। ठोकर की रेखा के ऊपर रहने का निर्णय लें। उसे लेने के लिए नीचे न झुकें। प्रेम के ऊंचे स्तर पर जीएं (बाद वाले अध्याय में इस पर चर्चा की जाएगी)।

पौलुस ने जो कहा उसका चुनाव करें:

प्रेरितों के काम 24:16
इससे मैं आप भी यत्न करता हूं कि परमेश्वर की, और मनुष्यों की ओर मेरा विवेक सदा निर्दोष (बिना ठोकर) रहे।

पौलुस ने परमेश्वर के प्रति और मनुष्यों के प्रति ठोकर से अपने विवेक को मुक्त रखने का तत्परता के साथ यत्न किया।

यूनानी भाषा में यत्न के लिए दिया गया शब्द है *'आसकियो'* जिसका अर्थ है प्रशिक्षण देना, व्याख्या करना, करना, तकलीफ उठाना, और अपने आप पर अधिक बोझ डालना, और परिश्रम करना।

निर्दोष (बिना ठोकर या आपत्ति) के लिए पौलुस यहां पर *'एप्रोसकोपोस'* इस शब्द का उपयोग करता है जो *'स्कॉनडेलोन'* से भिन्न है, जिसे हमने इससे पहले देखा। ठोकर या निर्दोष *'एप्रोसकोपोस'* का तीहरा अर्थ है:

1) ठोकर खाने का कारण न बनना, अर्थात दूसरों के पाप में गिरने का कारण न बनना।
2) ठोकर न खाना, अर्थात पाप में न गिरना, निर्दोष होना।
3) पाप का बोध नहीं, पाप से मुक्त हृदय।

इस प्रकार, पौलुस अपने विवेक को पाप और गलत कार्य से मुक्त रहने हेतु हर प्रयास कर रहा था। उसने पाप को किसी रीति से अनुमति नहीं दी थी—पाप करना, दूसरों के पाप में गिरने का कारण बनना या पाप के बोध में जीवन बिताना—उसे आंतरिक व्यक्तित्व में प्रवेश न करने देने

का। उसने अपने हृदय को शुद्ध और साफ रखने का चुनाव किया था (और उसके द्वारा विवेक को)।

हम ठोकर के ऊपर रहने का और परमेश्वर और मनुष्यों के प्रति अपने हृदयों को शुद्ध और साफ रखने का प्रयास कर सकते हैं। यह आसान नहीं होगा। हमें अपने आप को प्रशिक्षित करना है, अभ्यास करना है और यह करने का प्रयास करना है। लेकिन यह उसके लायक है। हम ठोकर की रेखा के ऊपर इसी रीति से जीवन बिताते हैं।

जब हम ठोकर का सामना करते समय तब हमें हृदय की जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है उनके विषय में हम चर्चा करेंगे।

उसे छोड़ देने का गुण

उत्पत्ति 50:15-21

15 जब यूसुफ के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता मर गया है, तब कहने लगे, कदाचित् यूसुफ अब हमारे पीछे पड़े, और जितनी बुराई हमने उससे की थी सबका पूरा पलटा हमसे ले।

16 इसलिये उन्होंने यूसुफ के पास यह कहला भेजा, कि तेरे पिता ने मरने से पहले हमें यह आज्ञा दी भी,

17 कि तुम लोग यूसुफ से इस प्रकार कहना, कि हम बिनती करते हैं, कि तू अपने भाइयों के अपराध और पाप को क्षमा कर; हमने तुझसे बुराई तो की थी, परन्तु अब अपने पिता के परमेश्वर के दासों का अपराध क्षमा कर। उनकी ये बातें सुनकर यूसुफ रो पड़ा।

18 और उसके भाई आप भी जाकर उसके सामने गिर पड़े, और कहा, देख, हम तेरे दास हैं।

19 यूसुफ ने उनसे कहा, मत डरो, क्या मैं परमेश्वर की जगह पर हूं?

20 यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिये बुराई का विचार किया था; परंन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया, जिससे वह ऐसा करे, जैसा आज के दिन प्रगट है, कि बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं।

21 सो अब मत डरो। मैं तुम्हारा और तुम्हारे बाल-बच्चों का पालन पोषण करता रहूंगा; इस प्रकार उसने उनको समझा बुझाकर शान्ति दी।

यूसुफ के भाइयों ने उसके साथ कैसा दुर्व्यवहार किया था। उसके पास उनसे से बदला लेने के कई अवसर थे। भाई बुरी से बुरी बात की

अपेक्षा कर रहे थे। और फिर भी जैसा कि हम देखते हैं, यूसुफ के भाइयों ने उसके साथ जो किया था उसके विषय में उसके हृदय में अपने भाइयों के प्रति दुर्भावना, नफरत या कटुता का कोई चिन्ह नहीं था। उसने बहुत पहले उन बातों को भुला दिया था। वह बातों को बड़े, विशाल और भव्य दृष्टिकोण से देखता था। उसने वही देखा जो परमेश्वर ने देखा।

यूसुफ के समान, हमें उन लोगों को छोड़ देने का जानबूझकर प्रयास करना है। जिस व्यक्ति (लोगों) के द्वारा ठोकर आई उसे क्षमा कर दें। जो कहा गया था और किया गया था उसे भुला दें। परमेश्वर के परिप्रेक्ष्य से बातों को देखें। भले ही "उन्होंने मेरे साथ ऐसा क्यों किया?" "यह सब और कहां ले जाएगा?" और "उन्हें कब एहसास होगा कि उन्होंने मेरे साथ गलत किया है" जैसे प्रश्नों के सारे उत्तर आपके पास नहीं हैं, फिर भी उसे छोड़ने का चुनाव करें। भरोसा रखें कि परमेश्वर इन सारी बातों में से कुछ भलाई को निकालेगा और आप इस ठोकर को अपने हृदय में प्रवेश करने नहीं देंगे। आपकी प्राथमिकता है अपने हृदय की रक्षा करना और इसलिए आप उसे छोड़ देने का जानबूझकर प्रयास करते हैं। आप ठोकर को स्वीकार न करने का चुनाव करते हैं।

परमेश्वर को आपका बदला चुकाने दें

रोमियों 12:17-21

17 बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उनकी चिन्ता किया करो।
18 जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो।
19 हे प्रियो, अपना पलटा न लेना, परन्तु क्रोध को अवसर दो; क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है, मैं ही बदला दूंगा।
20 परन्तु यदि मेरा बैरी भूखा हो, तो उसे खाना खिला; यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा।
21 बुराई से न हारो, परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।

ठोकर खाने पर जब हम रोमियों 12:17-21 में हमें जो आज्ञा दी गई है उसका अनुसरण करेंगे, तब हम इन बातों को करेंगेः

- हमें ठोकर देनेवाले को ठोकर देकर हम बदला नहीं लेते।
- जिसने हमें ठोकर दी है उसके साथ हम शांति से रहने का चुनाव करते हैं।
- जिसने हमें ठोकर दी है उसके साथ हम भलाई करते हैं और उसे आशीष देते हैं।

जब हम इन बातों को करते हैं, तब वस्तुतः हम मार्ग से हट जाते हैं और परमेश्वर को हमारा बदला चुकाने का मौका देते हैं। वह धर्मी न्यायाधीश है, जो हमारे हृदयों को देखता है और हमारे इरादे जानता है। यदि हम बातों को उसके हाथों में छोड़ देंगे, तो वह हमारा बदला चुकाएगा।

और यीशु ने हमारे लिए यही उदाहरण रखा हैः

1 पतरस 2:23
वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, परंतु अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौपता था।

घमण्ड (अहंकार) को आपके हृदय पर राज करने न दें

हम अपनी ठोकरों को, नाराज़गी को थामे रहते हैं इसका कारण हमारा अहंकार चोट खाया हुआ है।

मत्ती 11:28-30
[28] हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।
[29] मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं; और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे।
[30] क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हल्का है।

यीशु ने कहा कि वह सौम्यता, दीनता, नम्रता और विनम्र हृदय के साथ चला। हमें उससे सीखना है और इसमें उसका अनुसरण करना है।

जब हम यीशु के समान चलते हैं, हृदय में दीन और नम्र होते हैं, तब हम ठोकर नहीं खा सकते।

यीशु द्वारा बताए गए इस दृष्टांत पर विचार करें:

लूका 14:7-11

[7] जब उसने देखा कि नेवताहारी लोग कैसे मुख्य मुख्य जगहें चुन लेते हैं, तो एक दृष्टान्त देकर उनसे कहा,

[8] जब कोई तुझे विवाह में बुलाए, तो मुख्य जगह में न बैठना, कहीं ऐसा न हो, कि उसने तुझ से भी किसी बड़े को नेवता दिया हो;

[9] और जिसने तुझे और उसे, दोनों को नेवता दिया है, आकर तुझ से कहे कि इसको जगह दे, और तब तुझे लज्जित होकर सब से नीची जगह में बैठना पड़े।

[10] परंतु जब तू बुलाया जाए, तो सब से नीची जगह जा बैठ, कि जब वह, जिसने तुझे नेवता दिया है आए, तो तुझ से कहे कि हे मित्र, आगे ऊपर आकर बैठ; तब तेरे साथ बैठनेवालों के सामने तेरी बड़ाई होगी।

[11] क्योंकि जो कोई अपने आपको बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो कोई अपने आपको छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।

प्रभु यीशु हमें सिखा रहा है कि हम जानबूझकर नम्रता और दीनता के साथ चलें। इस तरह चलें जिससे आप ठोकर नहीं खा सकतें। जब आप नीचे होते हैं (नम्र हृदय), तो कोई आप को और नीचे नहीं ढकेल सकता। उनके पास आपको ठोकर देने का अवसर नहीं होता। यदि आपको नीचे उतरने के लिए कहा जाए, तो आपका हृदय पहले ही ऐसे स्थान में है जो उससे नीचे है। आप ठोकर नहीं खा सकते।

मसीही अगुवे होने के नाते, जब हमारा अहंकार आहत होता है, तब हमारे लिए ठोकर खाना आसान होता है। हम लोगों से अपेक्षा करते हैं कि वे हमारी उपाधियों के साथ हमें बुलाएं और जब कोई ऐसा नहीं करता तो हम दुखी हो जाते हैं (ठोकर खाते हैं)। हम अपेक्षा करते हैं कि हमें सभा में आगे निमंत्रित किया जाए और सबसे उत्तम स्थान दिया जाए और यदि ऐसा नहीं होता तो हम नाराज़ हो जाते हैं, ठोकर खाते हैं। हमें अपेक्षा होती है कि हमें मान-सम्मान और मान्यता मिले और हमारे सारे गुणों की, उपलब्धियों की घोषणा की जाए और जब ऐसा नहीं होता तब हम ठोकर खाते हैं। ये ठोकरें या नाराज़गी हमारे हृदय में इसलिए आती है क्योंकि हम घमण्ड को हमारे हृदयों पर राज करने देते हैं। उसके बजाय, यदि हम यीशु के समान दीन और नम्र हृदय के साथ चलें, हमारे साथ श्रेष्ठता

का व्यवहार हो ऐसी हमारी अपेक्षा न रही, तो हमारे पास ठोकर खाने का अवसर नहीं होगा।

हमें हृदय के अन्य दो महत्वपूर्ण के निर्णय लेना हैः

1) ठोकर को मन में रखकर कार्य न करें और

2) प्रेम में चलने का चुनाव करें।

अगले दो अध्यायों में हम इन्हें व्यक्तिगत तौर पर सम्बोधित करेंगे।

मनन



1) ठोकर को अपने मन में स्थान देने के विरोध में अपने हृदयों की रक्षा करना महत्वपूर्ण क्यों है?

2) क्या आपने ठोकरों को छोड दिया (क्षमा की)? क्या आपको प्रार्थना करने और परमेश्वर से यह बिनती करने की ज़रूरत है कि परमेश्वर आपके हृदय से उन ठोकरों को दूर करेगा, जिन्हें आपने पकड़कर रखा है?

3) जब आपको ठोकर लगती है, तो इन बातों को करें। जब आपके सामने ठोकर आती है, तब तीन "पहली प्रतिकियाओं" का समीक्षा करें, जिनकी रूपरेखा रोमियों 12:17-21 में दी गई है।

4) आप यीशु के समान जानबूझकर "नम्र और दीन हृदय" कैसे रख सकते हैं, ताकि आपके अहंकार को किसी रीति से चोट न पहुंचे, और इसलिए इस प्रकार ठोकर खाने का कोई अवसर न हो?

4
ठोकर को मन में रखकर कार्य न करें

पिछले अध्याय में हमने हृदय के तीन महत्वपूर्ण चुनावों के विषय में चर्चा की। जब हम ठोकर का सामना करते हैं, तब हमें ये चुनाव करना हैः

1) उसे छोड दें।

2) रोमियों 12:17-21 के अनुसार प्रतिकिया दें और परमेश्वर को आपका बदला चुकाने का अवसर दें।

3) घमण्ड आपके हृदय पर राज न करने पाए।

यह अध्याय हमारे ठोकर खाने पर हमारे द्वारा किए जाने वाले हृदय के चौथे महत्वपूर्ण चुनाव को सम्बोधित करता है। हम जानबूझकर ठोकरों को मन में रखकर कार्य न करने का चुनाव करते हैं। इसके लिए आत्म-संयम की आवश्यकता है।

दो ठोकरें व्यक्ति को सही नहीं बनाएगी

सभोपदेशक 10:4
यदि हाकिम का क्रोध तुझ पर भड़के, तो अपना स्थान न छोड़ना, क्योंकि धीरज धरने से बड़े बड़े पाप रुकते हैं।

आधुनिक समय के परिदृश्य की कल्पना करें। मान लीाजिए कि आपने कार्यस्थ्ल पर गडबड़ी दी। शायद वह छोटी-सी बात थी जो आप नहीं कर पाए। या वह कोई गम्भीर और महंगी गलती हो सकती है। आपका अधिकारी आप से क्रोधित है। वह क्रोध भरे ई-मेल भेजकर, मौख्कि अपमान से, कम रेटिंग देकर, उच्च अधिकारियों के पास असम्मति भेजकर आपनी नाराजगी व्यक्त करता है। अर्थात उसकी प्रतिकिया से आप आहत हुए हैं। आप सोचते हैं कि वह आवश्यकता से अधिक प्रतिकिया दे रहा है। आप

काम छोड देना चाहते हैं। निकल जाना चाहते हैं। विरोध करते हैं। कि उसने आपके साथ जो किया उसके लिए वह लायक नहीं था। दुसरी ओर पवित्र शास्त्र हमें प्रोत्साहन देता है कि "अपने पद को न छोडें।" नाराजगी की भावना से प्रेरित होकर प्रतिकिया व्यक्त न करें। ऐसा परिस्थिति में शांत रहने, सौम्य बने रहना, विनम्र रहना और मानसिक संतुलन बनाए रखने से सब कुछ शांत हो जाएगा।

ठोकर खाया हुआ हृदय घायल हृदय है

ठोकर खाया हुआ हृदय घायल हृदय है। अंदर चोट है। "आत्मा घायल" है।

नीतिवचन 17:22
मन का आनन्द अच्छी औषधि है, परन्तु मन के टूटने से हड्डियाँ सूख जाती हैं।

टूटी हुई आत्मा हड्डियों को सुखा देती है। इसका अर्थ यह हुआ कि टूटी हुई आत्मा आपके "अंदर से जीवन को सोख लेती है," आपको सूखा छोड़ देती है और वास्तव में आपको घायल कर देती है।

नीतिवचन 18:14
रोग में मनुष्य अपनी आत्मा से सम्भलता है; परन्तु जब आत्मा हार जाती है तब उसे कौन सह सकता है?

आंतरिक व्यक्ति ही हमें चुनौती पूर्ण परिस्थितियों में सम्भालता है, जिसमें बीमारी के समयों का समावेश है। परंतु यदि आतरिक मनुष्य घायल, चोट खाया हुआ और टूटा हुआ है, तो उस व्यक्ति के पास वह नहीं है जो चुनौती के समय में संभालता है।

इसलिए यदि हम ठोकर खाते हैं और उसे हमारे हृदयों में प्रवेश करने का मौका देते हैं, तो वास्तव में हम निर्बलता के स्थान पर है, बल के नहीं।

हम गलत निर्णय लेते हैं और गलत चुनाव करते हैं। हम अक्सर अपनी नाराज़गी या ठोकर से अन्धे हो जाते हैं। हमारे निर्णय अक्सर हमारे द्वारा महसूस की जाने वाली चोट से धुधंले पड़ जाते हैं।

जब हम चोट से प्रेरित होकर कार्य करते हैं, तब हम दूसरों को चोट पहुंचाने की प्रवृत्ति रखते हैं। घायल लोग दूसरे लोगों को चोट पहुंचाते हैं। कभी-कभी उसे आत्मरक्षा कहकर छोड़ देते हैं, परंतु फिर भी हम अपने निकटतम प्रियजनों को चोट पहुंचाते हैं।

इसलिए उत्तम होगा कि हम ठोकर न खाएं, आत्मसंयम बरतें और घायल हृदय से पेरित होकर कार्य न करने का चुनाव करें। परमेश्वर को मौका दें कि वह आपका चंगा करे और उस बात को छोड़ देने में आपकी सहायता करे, आपके हृदय को उस ठोकर से साफ और शुध्द करें। फिर आगे बढें।

ठोकर कटुता को जन्म देती है

यदि हम उसे तुरंत दूर न करें, तो यह कटुता, क्षमाहीनता, क्रोध और नफरत जैसी गलत भावनाओं को जन्म देगा। हम उस व्यक्ति के प्रति कटुता रखते हैं।

हमारे हृदय में कटुता रखना क्या है?

इब्रानियों 12:14,15

[14] सब से मेल मिलाप रखें, और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा।

[15] और ध्यान से देखते रहो ऐसा न हो, कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट दे, और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएं।

कटुता एक जड के समान है, जिस पर यदि नियंत्रण नहीं रखा गया, तो वह बढ़कर मुश्किल पैदा करेगी–हमारे लिए हर प्रकार की मुश्किलें। वह हमारे द्वारा दूसरों पर अपना प्रभाव भी डालेगी और जिस बात का हम अनुभव कर रहे हैं उसे उन्हें देगी। यदि कटुता पर काबू न रखा जाए तो वह संक्रामक बन जाएगी और फैलती जाएगी। दूसरे भी कटु स्वभाव के हो जाएंगे जैसे हम हैं।

इब्रानियों 12:15 में दिलचस्प बात यह है कि कटुता से पहले दी गई चेतावनी से पहले यह चेतावनी दी गई है कि हम परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित न रह जाएं। परमेश्वर भरपूर अनुग्रह रखनेवाला परमेश्वर है। हर एक के लिए उसके पास उमण्डता हुआ, असीम अनुग्रह उपलब्ध है। परंतु, हमारे हृदय की कड़वाहट के कारण हम उस बात को ग्रहण कर नहीं पाते जो परमेश्वर उसके अद्‌भुत अनुग्रह के द्वारा हमारे लिए हममें और हमारे द्वारा कर सकता है। यदि कटुता पर नियंत्रण न रखा जाए, तो वह क्षमाहीनता की ओर ले जाती है जो विश्वास के मार्ग मे रुकावट बनता है (मरकुस 11:22-25)।

यदि कटुता पर काबू न रखा जाए, तो वह नफरत की ओर ले जाती है। नफरत या घृणा व्यक्ति को अन्धा बना देती है (1 यूहन्ना 2:9,11)। हम अंधियारे में रहनेवालों से समान टटोलते हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि हम कहीं जा रहे हैं, परंतु नहीं जानते कि कहां जा रहे हैं, क्योंकि नफरत हमें अन्धा बना देती है।

नफरत या घृणा हत्या है (1 यूहन्ना 3:15)। जब हम कटुता से प्रेरित होकर कार्य करते हैं तब हम अक्सर हत्या का सहारा लेते हैं। जिसने हमें ठेस पहुंचाई है उस व्यक्ति (लोगों) के चरित्र, प्रतिष्ठा, सम्मान की हत्या करने से हम पीछे नहीं हटते। कभी-कभी हम सभी लोगों के साथ ऐसा करते हैं। हम कहते हैं हर कोई ऐसा ही है। एक ठोकर या ठेस जिसने हृदय में प्रवेश किया है कड़वाहट को जन्म देती है जो सब के प्रति एक सामान्य नफरत का भाव उत्पन्न करती है।

इस प्रकार की नकारात्मक भावनाओं को हमारे हृदय से दूर न किया जाए तो हमें केवल परेशान करेगी और हमें हानि पहुंचाएगी।

नाराज़गी (ठोकर) को न फैलाएं

जैसा कि इब्रानियों 12:15 बताता है, यदि कड़वाहट पर नियंत्रण न रखा जाए तो वह हमारे आसपास के लोगों के हृदयों को भी भर देती है।

जब हम ठोकर से प्रेरित होकर कार्य करते हैं तब हम ठेस या नाराज़गी की भावनाओं को अन्य लोगों में बांटने और फैलाने लगते हैं। हम जो कुछ उन्हें बताते हैं उसके द्वारा उनके विचार, बुध्दि और दृष्टिकोण भी धुंधला पड़ जाते हैं।

रोमियों 16:17

अब हे भाइयो, मैं तुमसे बिनती करता हूं कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुमने पायी है, फूट पड़ने, और ठोकर खाने (यूनानी *स्कॉनडेलोन*) **के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो, और उनसे दूर रहो।**

बाधा न डालने का या ठेस न पहुंचाने का निर्णय लें

रोमियों 14:10,13

[10] तू अपने भाई पर क्यों दोष लगाता है? या तू फिर क्यों अपने भाई को तुच्छ जानता है? हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे।

[13] इसलिए भविष्य में हम एक दूसरे पर दोष न लगाएं, पर तुम यही ठान लो कि कोई अपने भाई के सामने ठेस (यूनानी *प्रोसकोमा*) **या ठोकर** (यूनानी *स्कॉनडेलोन*) **खाने का कारण न रखे।**

रोमियों 14 में, पौलुस इस तथ्य को सम्बोधित करता है कि विभिन्न विश्वासी भोजन, विशेष दिन, जैसी बातों को भिन्न दृष्टिकोण से देखते होंगे। उसके बाद उसने विश्वासियों के नाते हमें यह उपदेश दिया है हमें इन बातों में एक दूसरे पर दोष नहीं लगाना है। हममें से प्रत्येक को अपने मनों में पूरा यकीन होना चाहिए और उन्हें यह जानना है कि हम परमेश्वर को सारी बातों का हिसाब देंगे। परंतु, भले ही हमें इस बात की आज़ादी है, फिर भी हमें सावधान रहना है कि हम ठोकर का कारण न बनें। ऐसा कुछ न करें जिससे दूसरे विश्वासी को ठेस पहुंचेगी।

रोमियो 14:13 में, ठोकर का पत्थर के लिए दिया गया यूनानी शब्द है *'प्रोसकोमा'* जिसका अर्थ है वह बाधा जिस पर किसी को ठेस लग सकती है। ठोकर खाने का कारण ये शब्द यूनानी भाषा के *'स्कॉनडेलोन'* से आते है जिस पर हमने पहले अध्ययन किया है।

विश्वासी होने के नाते, हमें दूसरों के मार्ग में रुकावट नहीं लाना है, या एक दूसरे को ठेस नहीं पहुंचाना है।

जब हम प्रभु का स्थान लेने की कोशिश करते हैं और जिन बातों का कोई परिणाम नहीं होता उन बातों में (रोमियों 14:4) और जहां पर स्वयं प्रभु हमें अपने चुनाव करने की और उसके प्रति उत्तरदायी रहने की आज़ादी देता है, उसमें हम दूसरों पर दोष लगाते हैं, तब हम एक दूसरे के लिए बाधक बनते हैं और उन्हें ठेस पहुंचाते हैं (रोमियों 14:12)।

जब हम दूसरों को तुच्छ दिखाते हैं, नीचा दिखाते हैं, तिरस्कृत समझते हैं, अपने आप को ऊंचा दिखाते हैं, सोचते हैं कि हम बेहतर हैं, तो दूसरे व्यक्ति के साथ हीनता का व्यवहार करते हैं, और तब हम एक दूसरे के लिए बाधक बनते हैं।

इतना सब कहने और करने के बाद, हमें ठोकर को स्वीकार न करने का और ठोकर से प्रेरित होकर कार्य न करने का विचारपूर्वक चुनाव करना है।

मनन



1) ठोकर या ठेस खाया हुआ ह्रदय घायल ह्रदय है। ठोकर को मन में रखने से हम पर व्यक्तिगत तौर पर कैसे असर पड़ता है?

2) ठोकर से जन्मी हुई कुछ नकारात्मक भावनाएं क्या हैं? इनका हम पर और हमारे आसपास के लोगों पर कैसे प्रभाव पड़ता है?

3) रोमियों 14:10,13 के अनुसार, यह सुनिश्चित करने के लिए कि हम बाधक न बनें, या ठोकर का कारण न बनें, हमें कौन-सी दो बातों में लगे रहना है?

5
प्रेम हमें स्वतंत्र रखता है

पिछले अध्याय में हमने हृदय के चार महत्वपूर्ण चुनावों के विषय में चर्चा की। जब हम ठोकर का सामना करते हैं, तब हमें ये चुनाव करना है :

1) उसे छोड दें।
2) रोमियों 12:17-21 के अनुसार प्रतिकिया दें और परमेश्वर को आपका बदला चुकाने का अवसर दें।
3) घमण्ड आपके हृदय पर राज न करने पाए।
4) ठोकर को मन में रखकर कार्य न करें।

यह अध्याय हमारे ठोकर खाने पर हमारे द्वारा किए जाने वाले हृदय के पांचवें महत्वपूर्ण चुनाव को सम्बोधित करता है। हम जानबूझकर प्रेम में चलने का चुनाव करते है। प्रेम हमारे हृदय को साफ, स्पष्ट और स्वतंत्र रखता है।

प्रेम आपके हृदय को साफ करता है

1 यूहन्ना 2:10
जो कोई अपने भाई से प्रेम रखता है, वह ज्योति में रहता है, और ठोकर (यूनानी *स्कॉनडेलोन)* **नहीं खा सकता।**

आहत होने (ठोकर खाने) की सब से बड़ी प्रति औषधी है हमारे द्वारा बहने वाला परमेश्वर का प्रेम।

जब हम ठोकर खाते हैं, अपमानित होते है और क्रोधित होते हैं, तब हम उसके दर्द को महसूस करते हैं। परंतु उस क्षण हम परमेश्वर के प्रेम को निमंत्रित करते हैं जो उसके आत्मा के द्वारा हमारे हृदयों में उण्डेला

गया है (रोमियों 5:5) कि हम में से बहकर उस व्यक्ति (लोगों) तक जाए जिन्होंने हमें चोट पहुंचाई है।

जब हम ऐसा करने का निर्णय लेते हैं, और प्रेमपूर्ण हृदय बनाए रखते हैं, तब हम ज्योति में बने रहते हैं। परमेश्वर की ज्योति हमारे हृदय को भर देती है। हमारे हृदय शुध्द, साफ और स्वतंत्र होते हैं। नाराज़ होने (ठोकर) को हमारे जीवन में कोई स्थान नहीं है। ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमें फंसाए या हमें नाराज़गी दिलाए। प्रेम और नाराज़गी एक साथ नहीं रह सकते।

हमारे दिल में परमेश्वर के प्रेम के साथ, हम उन लोगों को क्षमा और आशीष जारी करते हैं जिन्होंने हमें ठेस पहुंचाई, ठोकर दी।

हम अब उस व्यक्ति (या लोगों) से बात कर सकते हैं जिसने हमें ठोकर दी थी, आहत किया था, उनके प्रति हमारे हृदयों में केवल प्रेम के साथ। हम बता सकते हैं कि उन्होंने जो किया उससे हमें दुख पहुंचा। और हम क्रोध, ठेस, बदला या दुर्भावनाओं के बिना ऐसा कर पाते हैं। हम प्रेम के साथ और क्षमा के भाव के साथ ऐसा कर पाने में सक्षम हैं।

प्रेम सारी बातों को जीत लेता है

नीतिवचन 10:12
बैर से तो झगड़े उत्पन्न होते हैं, परंतु प्रेम से सब अपराध ढंप जाते हैं।

नीतिवचन 17:9
झूठा साक्षी निर्दोष नहीं ठहरता, और जो झूठ बोला करता है; वह नाश होता है।

जब हम ठोकर के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में प्रेम में चलते हैं, तब हम अपना अपराध करने वाले का बदला लेने की कोशिश नहीं करते। उनकी गलती पर या जो कुछ भी उन्होंने किया है जिससे हमें ठेस पहुंची, ठोकर लगी, उस पर हम पर्दा डालने का प्रयास करते हैं।

हम अन्य लोगों के बारे में अपने शब्दों के विषय में सावधान रहते हैं। हम बात को इस तरह से दोहराने से इन्कार करते हैं, जो वे जैसे हैं उसे

विकृत करता है, नीचा दिखाता है या उनकी प्रतिष्ठा कम करता है। हम सतर्क रहते हैं कि हमारे शब्दों से उनके और दूसरों के बीच शत्रुता या दरार उत्पन्न न हो।

यह वह प्रेम है जो सभी को जीतता है। यह वह प्रेम है जो ठोकर पर जय पाता है। यह प्रेम फंदा और ठोकर के पत्थरों पर विजय प्राप्त करता है जिसे हमारे आगे रखने का शत्रु इंतज़ार कर रहा था।

प्रेम करें, चाहे जो भी हो

1 यूहन्ना 4:11
हे प्रियो, जब परमेश्वर ने हमसे ऐसा प्रेम किया, तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए।

ठोकर या नाराज़गी के समय में परमेश्वर के प्रेम से प्रेम करना कोई छोटी बात नहीं है। ऐसा हम क्यों महसूस करते हैं कि हमें ठेस पहुंचाने वाला हम से ऐसी प्रतिक्रिया के लायक नहीं है इसके कई कारण हैं। लेकिन उसी समय हम अपने आप को स्मरण दिलाते हैं कि यदि परमेश्वर हमसे ऐसे अवर्णनीय तरीके से और अनंत परिमाण से प्रेम करता है, तो हमें ठोकर देने वाले को समान रूप से प्रेम करने के अलावा हमारे पास अन्य कोई विकल्प नहीं है। हम उससे (या उनसे) प्रेम करते हैं जिसने हमें नाराज़ किया है, ठोकर दी है, चाहे जिस रीति से।

कार्य रूप मे प्रेम, मात्र शव्द में नहीं

1 यूहन्ना 3:18
हे बालको, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें।

रोमियों 12:9
प्रेम निष्कपट हो ...

यह मात्र ऐसा कुछ नहीं है जिसे हम बौद्धिक रूप से या सैद्धांतिक रूप से टाल देते हैं, परंतु जिसे हम वास्तविक जीवन में करते हैं। हमारा प्रेम सच्चा है। यह वास्तविक है। यह हमारे हृदय से बहता है। वह अतीत

को मिटा देता है। यह ठोकर देने वाले को उनके अपराध या ठोकर से मुक्त करता है। हम इसी तरह जीते हैं।

प्रेम केवल ठोकर देने वाले को मुक्त नहीं करता, वह हमें भी मुक्त करता है। हम स्वच्छ, शुद्ध और स्वतंत्र होते हैं।

प्रेम हमें ठोकर की रेखा के ऊपर जीने हेतु मुक्त करता है। हमेशा ठोकर की रेखा के ऊपर जीए।

मनन



1) क्या ऐसा कोई है (या कुछ लोग) जिसने आपको ठोकर (ठेस) पहुंचाई है, आपको उन्हें प्रेम से क्षमा करने की (छोड़ देने की) ज़रूरत है? इस अध्याय का अवलोकन करने में कुछ समय बिताएं और उस व्यक्ति (लोगों) के प्रति प्रेम की प्रतिक्रिया लागू करें।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"*** **(रोमियों 6:23)।** यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति

का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह मुफ्त क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" **(प्रेरितों के काम 10:43)।**

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा" **(रोमियों 10:9)।**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धि पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए। आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च (एपीसी) का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

आल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केन्द्रित, आत्मा से भरपूर परिवारिक कलीसिया,** एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधार, संसार में सुसमाचार करने वाली कलीसिया है

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में हम ईश्वरीय अगुवों और आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझोते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें: **apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें: **contact@apcwo.org**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses–Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Speaking in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। पी. डी. एफ., आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में निःशुल्क ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, निःशुल्क ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस परामर्श

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस परामर्श व्यावसायिक तौर प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु समूहों के लिए हैं और जीवन की चुनौतियों की एक विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती हैं।

किशोरों
व्यक्तिगत समायोजन
संबंधपरक चुनौतियां
शिक्षा में कम सफलता पाने वाले
कार्य संबंधित मुद्दे
परिवार /दम्पत्तिः विवाह पूर्व, वैवाहिक
माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी
व्यवहार सम्बंधी विकार
व्यक्तित्व विकार
मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं
तनाव / आघात
शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल
आत्मिक समस्याएं
ज़िंदगी की सीख

क्रिसलिस परामर्श सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए:

Website: chrysalislife.org
Phone: +91-80-25452617 or toll-free (within India) 1-800-300-00998
Email: counselor@chrysalislife.org

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, मसीही अगुवों के लिए सभाओं का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में निःशुल्क वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस का कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

Account Name: All Peoples Church
Account Number: 50200068829058
IFSC Code: HDFC0004367
Bank: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru, 560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें:* **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

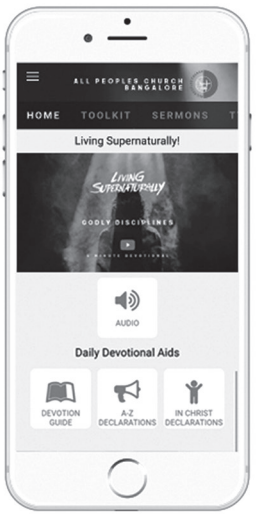
धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play





A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज और सेवा प्रशिक्षण केंद्र (एपीसी-बीसी) भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

एपीसी-बीसी में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं:

- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (सी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय डिप्लोमा (डी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय स्नातक (बी.टी.एच.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक** (UTC+5:30) कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैंपस:** कैंपस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लें
- **ऑनलाइन:** ऑनलाइन लाइव व्याख्यान में भाग लें
- **ई-लर्निंग:** ऑनलाइन पोर्टल **apcbiblecollege.org/elearn.**

के माध्यम से स्वयं की गति से सीखना ऑनलाइन आवेदन करने के लिए, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के बारे में अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस वेबसाइट को भेंट दें: **apcbiblecollege.org**

जीवन में, कई प्रकार की बातें ठोकर खिलाती हैं। एक बार जब हम ठोकर खा जाते हैं, तो यह आंतरिक रूप से हमें विभिन्न रीतियों से प्रभावित करती है जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। जब हम एक ठोकर खाए हुए मन के साथ काम करते हैं, हम अक्सर ऐसा सोचते हैं, कहते हैं और व्यवहार करते हैं जोकि बहुत ही अमान्य और अव्यवहारिक होता है जब यह कलीसिया, परमेश्वर के लोगों के जीवन में कार्य करता है तो हम बहुत ही दुखद बातों को होते देखते हैं।

बाइबल ठोकर के विषय में क्या कहती है? जब हम ठोकर खाते हैं तो हमारा प्रतिउत्तर कैसा होना चाहिए? हमारे ठोकर खाने द्वारा उत्पन्न होने वाली नकारात्मक भावनाओं से हम कैसे छुटकारा पा सकते हैं? परमेश्वर के वचन में से यह साधारण परंतु प्रकाशित करने वाला अध्ययन आपके इन सवालों का उत्तर दे सकता है और आपकी सहायता कर सकता है कि आप हमेशा ठोकर रहित जीवन व्यतीत कर पाएं।

हमेशा ठोकर की रेखा से ऊपर जीवन बिताएं !

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org